Shree Greater Bombay Vardhman Sthanakvasi Jain Mahasangh-Mumbai
Conducted
MATUSHREE MANIBEN MANSHI BHIMSHI CHHADVA DHARMIK SHIKSHAN BOARD – MUMBAI
धार्मिक शिक्षण बोर्ड
Website : jaineducationboard.org E-mail : jainshikhshanboard@gmail.com

१६ जुलाई २०२३ – जैनशाळा पेपर - गुण : १०० - समय : ३ से ६

श्रेणी- ५

(अ) पाठ पूर्ति करो। (१०)

(१) नेमप्रभ स्वामी ....., ..., ... अजितसेन स्वामी

(२) मुनिसुव्रत स्वामी ....., ..., ... महावीर स्वामी

(३) सजोगी ....., ..., ... यथाख्यात

(४) देवसिय ....., ..., ... काउसग्गं

(५) तिविहेणं ....., ..., ... चउव्वीसं

(ब) खाली जग्या पुरो। (आंकडा मां ज उत्तर लखो।) (१०)

(१) ..... लाख जिवायोनी छे।

(२) ..... ईन्द्रोना पूजनिक छे।

(३) ..... प्रकारनुं दान दइ कर पवित्र करतां हशे।

(४) ..... श्रावकना गुण छे।

(५) ..... महाविदेह क्षेत्रो छे।

(६) ..... दोष रहित अरिहंत छे।

(७) ..... उत्तम लक्षणना धरणहार छे। (अरिहंत)

(८) ..... व्रतधारी श्रावक होय छे।

(९) ..... राजलोक अंजली जल प्रमाणे जाणे देखे छे।

(१०) ..... अतिशये करी बिराजमान छे।

(ग) १२ व्रतने आधारे जवाब लखो। (अर्थ लखो।) (०५)

(१) सागविहिं - .....

(२) बंधे -.....

(३) परोवअेसे - .....

(४) भोमालिक - .....

(५) खातरखणी - .....

(घ) प्रश्नोतर (बार व्रतना आधारे लखो।) **(०५)**

(१) छठुं व्रत शेना विशेनुं छे ?

(२) परिग्रह केटला छे ?

(३) व्रत अेटले शुं ?

(४) मोटुं झुठ्ठुं केटला प्रकारनुं छे ?

(५) रात्रिभोजननो त्याग कया व्रतमां आवे छे ?

प्र.२) कर्म प्रकृतिना आधारे जवाब लखो।

(क) नीचे आपेला शब्दोमांथी अयोग्य शब्दने राउन्ड करो। **(०५)**

(१) कुळ मद - लाभ मद - तप अमद - जाति मद

(२) अनिष्ट स्वर - इष्ट रुप - अनिष्ट गंध - अनिष्ट शब्द

(३) महा आरंभ - गाढ माया करे - पंचेन्द्रिय जीवोनो वध - महापरिग्रह

(४) रति - लोभ - हास्य - अरति

(५) अगुरुलघु नाम - आताप नाम - पर्याप्त नाम - पराघात नाम

(ख) नीचेना प्रश्नोना जवाब लखो। **(१०)**

(१)वेदनीय कर्म शेना समान छे ?

(२)अंतराय कर्म शेना समान छे ?

(३)आयुष्य कर्मे कयो गुण रोक्यो छे ?

(४) नाम कर्मे कयो गुण रोक्यो छे ?

(५) कर्म प्रकृतिनो थोकडो कया कया सूत्रमांथी लेवायो छे ?

(६) प्रत्याख्यानी माया शेना समान छे ?

(७) सडी जाय, पडी जाय, बगडी जाय, ते कयुं शरीर ?

(८) शरीरमां हाडकां मांस ना होय ते कयुं शरीर ?

(९) अनंतानुबंधी क्रोध शेना समान छे ?

(१०) सौथी वधारे कर्म प्रकृति कया कर्मनी छे ?

(ग) कर्म प्रकृतिना आधारे आंकडामां जवाब लखो। **(१०)**

(१) नो कषाय चारित्र मोहनीयनी प्रकृति केटली ?

(२) नारकीनी उत्कृष्ट स्थिति केटला सागरोपमनी ?

(३) नीच गोत्र केटला प्रकारे बांधे ?

(४) दर्शनावरणीय कर्म केटला प्रकारे बांधे ?

(५) दर्शन मोहनीयनी प्रकृति केटली ?

(६) मोहनीय कर्म विस्तारथी केटला प्रकारे भोगवाय ?

(७) पिंड प्रकृति नी विस्तारथी केटली प्रकृति छे ?

(८) वदेनीय कर्म कुल केटला प्रकारे बांधे ?

(९) नाम कर्मनी भोगववानी प्रकृति केटली ?

(१०) आयुष्य कर्म केटला प्रकारे बांधे ?

(घ) व्याख्या लखो। (कर्म प्रकृति आधारे) **(०५)**

(१) काय सौख्य —

(२) इष्ट गंध —

(३) हास्य —

(४) सुस्वर नाम —

(५) कुळ विशिष्ट —

प्र.३) छ आराना आधारे जवाब लखो। (अवसर्पिणी काळ) **(१०)**

(१) ६४ दिवस छोरुनी प्रतिपालना कोण करे ?

(२) बीजा आरानुं नाम शुं छे ?

(३) बे दिवसे आहारनी इच्छा कया आरा ना मनुष्यने थाय ?

(४) प्रथम आराना मनुष्यनी गति केटली ?

(५) त्रीजा आरानुं काळमान केटलुं ?

(६) दररोज खावानी ईच्छा केटला आराना जीवोने थाय ?

(७) कया आराना जीवोनुं आयुष्य ३ पल्यनुं छे ?

(८) २१००० वर्षना केटला आरा छे ?

(९) छट्ठा आरामां बेसतां पांसळी केटली ?

(१०) छट्ठा आरामां कयुं संघयण होय ?

प्र.४) गोचरीनी समजण (खाली जग्या पूरो.) **(१०)**

(१) साधु-साध्वीजीने ..... प्रकारनुं दान आपी शकाय.

(२) श्रावके पोते ..... त्यागी थवुं.

(३) ..... वस्तुओने अलग राखवी.

(४) बारमां व्रतनुं नाम ..... संविभाग छे।

(५) संतो पधारे त्यारे ..... डगला सामे जवुं.

(६) समजण न पडती होय तेणे ..... ने पूछीने वस्तु लेवी मुकवी।

(७) ..... पहेला पू. संतोने वहोरावानी भावना भाववी।

(८) जरुर होय तो गोचरी ना अन्य ..... बतावा जवुं.

(९) साधुना निमित्ते ..... लीधेलुं होय ते वहोरावुं नहि।

(१०) गोचरीना समये घरना ..... खुल्लां राखवा.

प्र.५) कथाना आधारे जवाब लखो। **(१०)**

कोण बोले छे? कोने कहे छे?

(१) आपनो पुत्र तीर्थंकर थशे।

(२) तमने अेवो पुत्र थशे जे महान कुलकर थशे।

(३) धर्म तीर्थ नो फेलावो करीने परमसुखनो मार्ग खोलो।

(४) हुं तमारी परीक्षा लेवा आव्यो हतो।

(५) हे भगवान! हुं निर्ग्रंथ प्रवचनमां श्रध्धा करुं छुं।

प्र.६) साधुं वंदना (१ थी ७७ कडी सुधी) **(१०)**

(१) अंतगड सूत्रमां मारो अधिकार नथी।

मेघकुमार - गौतमकुमार - गजसुकुमार - मल्लिकुमार

(२) उत्तराध्ययन सूत्रमां मारो अधिकार नथी।

विजयघोष - धर्मघोष - जयघोष - गर्गाचार्य

(३) भगवतीसूत्र मां मारो अधिकार नथी।

शुक्रदेव संन्यासी - सुदर्शन शेठ - कार्तिक शेठ - सुनक्षत्र

(४) ज्ञातासूत्रमां मारो अधिकार नथी.

शैलेक - दारुक - पुंडरिक - कुंडरिक

(ब) प्रश्नोना जवाब लखो।

(१) उत्कृष्ट केवळी केटला होय?

(२) भृगु पुरोहितना केटला पुत्रोअे संयम लीधो?

(३) भाणेज ने राज्य कोणे सोंप्युं?

(४) धर्मरुचि अणगारना गुरुनुं नाम लखो।

(५) मेघमुनि काळ करी क्यां गया?

(६) अर्जुनमाळी ए केटला महिनामां आठ कर्म खपाव्यां?

OR

(क) साधु वंदना पाठ पूर्ति करो। **(१०)**

(१) मल्लिनाथना ..... पाय।

(२) श्री उत्तराध्ययनमां ..... आण।

(३) वळी कार्तिक शेठे ..... खीर।

(४) इण अवसर्पिणीमां ..... देवलोक।

(५) अेक मास संथारे ..... अधिकार।